भारतीय मातृभाषा शिक्षण का महत्व

डॉ. ऊषा रानी मलिक
शिक्षा विभाग
सूरजमल संस्थान
जनकपुरी, नई दिल्ली

सारांशिका

समाज में भाषा का बहुत बड़ा महत्व है क्योंकि बिना भाषा के कोई भी स्त्री, पुरुष अथवा बच्चा सम्प्रेषण नहीं कर सकता बल्कि वह किसी को भी अपनी बात नहीं समझा पाएगा इसलिए समाज में विभिन्न सम्प्रदाय एवं धर्म के मानने वाले लोग रहते हैं जिनकी मातृभाषा अलग–अलग है। फिर भी वह परस्पर एक–दूसरे की भाषा से जुड़े हुए रहते हैं और अपने कार्य को सम्पन्न भाषा के माध्यम से कर लेते हैं। जैसे बच्चा अपनी मातृभाषा से जन्म से जुड़ा रहता है वैसे ही वह बड़ा होकर भी जुड़ा रहता है। इसलिए बच्चा अपनी मातृभाषा को जन्म से सीखता है और बोलता है किन्तु फिर भी अपनी भाषा को सुधारने एवं भाषा के निरन्तर विकास के लिए बच्चे को अपने चारों ओर होने वाले शब्दों से भाषा को दिन प्रतिदिन सीखना पड़ता है और निखारना पड़ता है। अतः बच्चे को अपनी मातृभाषा का ज्ञान केवल सम्प्रेषण के स्तर तक ही नहीं होना चाहिए बल्कि उसे भाषा के चारों कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना) पर भी नियन्त्रण होना चाहिए तभी वह परिवार एवं समाज में एक अच्छी भाषा को बोलकर तथा पढ़कर अपने आप को सक्षम बना सकता है। भाषा को सुनकर उसके सही अर्थ को समझना ही श्रवण कौशल की स्थिति बन जाती है इसलिए यदि वक्ता द्वारा कही गई बातों को श्रोता सही ढंग से न समझ पाए तब सम्प्रेषण कार्य कभी भी पूरा नहीं हो पाएगा। अतः कई बार हम इस कौशल में निपुण न होने के कारण अर्थ का अनर्थ भी कर जाते हैं जिससे हमें बहुत हानि उठानी पड़ सकती है।

मुख्य बिन्दु : मातृभाषा, शिक्षण, सम्प्रेषण, व्यवहार, कौशल।

प्रस्तावना

वस्तुतः समाज में भाषा का प्रयोग प्रायः हम सभी करते हैं किन्तु भरण–पोषण के द्वारा प्रयोग किए जाने वाली भाषा का शुद्ध उच्चारण किस प्रकार से किया जाए और उसकी क्या स्थिति होनी चाहिए जैसे लोग स को श, ल को र या य को ज प्रयोग करते हैं तब हम भाषण कौशल के माध्यम से हम उच्चारण के समय होने वाली गलतियों को सुलझा सकते हैं और फिर शुद्ध वाक्यों, शब्दों आदि का प्रयोग कर सकते हैं तभी ऐसी भाषा समाज में सार्थक होगी जो ''शिष्ट समाज के व्यवहार की भाषा रह गई हो।'' जब हम भाषा को अच्छी तरह से समझ नहीं पाते तब हम अनेक गलतियाँ करते रहते हैं जिससे भाषा का उचित ज्ञान होने पर भी हम भाषा का सही रुप से पठन एवं पाठन नहीं कर सकते हैं और उच्चारण के समय होने वाली अनेक गलतियों को सुधार सकते हैं अतः किसी भी अक्षर या शब्द का सही उच्चारण किया जाए तब अनुतान, बलाघात, लघु–दीर्घ स्वर, स्वरों और व्यंजनों का उच्चारण इत्यादि किस तरह से किया जाए तथा किस वर्ण के उच्चारण में मुखावयवों की कौन सी स्थिति होती है इन सबका परिचय हमें इसी कौशल के द्वारा ही देखने को मिलता है जिससे हम आगे बढ़ते रहते हैं और तभी हम किसी बच्चे को सही ज्ञान एवं अर्थ की प्रतीति होती है।

भारतीय मातृभाषा शिक्षण का महत्त्व

भारतीय बच्चे अपनी लोकभाषा जिसमें उन्हें कम से कम गिनती तो आनी चाहिये, उसे भूलते जा रहे हैं। इससे उनके मस्तिष्क पर भी गलत असर पड़ता है और उनकी लोकभाषा में गणित करने की क्षमता कमज़ोर हो जाती है।

जब हम छोटे बच्चे थे तब पहली से चौथी कक्षा का गणित लोकभाषा में पढ़ाया जाता था। अब धीरे–धीरे यह प्रथा लुप्त होती जा रही है। लोकभाषा, मातृभाषा में बच्चों का बात ना करना अब एक फैशन हो गया है। इससे गाँव और शहर के बच्चों में दूरियाँ बढ़ती हैं। गाँव, देहात के बच्चे जो सब कुछ अपनी लोकभाषा में सीखते हैं। अपने को हीन और शहर के बच्चे जो सब कुछ अंग्रेजी में सीखते हैं, स्वयं को श्रेष्ठ, बेहतर समझने लगते हैं। इस दृष्टिकोण में बदलाव आना चाहिये। हमारे बच्चों को अपनी मातृभाषा और उसी में ही दार्शनिक भावों से ओतप्रोत लोकगीत का आदर करते हुए सीखना चाहिये नहीं तो हम अवश्य ही कुछ महत्वपूर्ण खो देंगे।

बच्चा भाषा को लिखने में कौशल प्राप्त करता है और किस वर्ण को किस तरह से लिखा जाए उस वर्ण का प्रयोग वह किन–किन शब्दों में किस तरह कर सकता है इसलिए वाक्य में एक चिन्ह के प्रयोग से वह किस तरह से अन्तर कर देता है ऐसी विषमता वाक्य में आ जाती है। वह वाक्य किस प्रकार साधारण वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, विस्मयादि बोधक बन जाता है। अतः मात्राओं का प्रयोग वह किस तरह से करता है आदि यह सब लेखन कौशल द्वारा ही बालक को समझ में आने लगता है। इस कौशल लेखन से ही सही तरह से वाक्य लिखने के शुद्ध रूप को बच्चा देखता है और लिखता है और फिर लिखकर सही रुप से भाषा का ज्ञान उसे प्राप्त होता है जिससे आगे वह फिर कोई गलती नहीं कर पाता या कर पाएगा। ऐसी स्थिति बहुत कम देखने को मिलती है। ''देश के सम्पूर्ण विकास के लिए उस देश की मातृभाषा का विकसित होना अत्यन्त आवश्यक है।'' इसलिए तभी तो मातृभाषा शिक्षण के द्वारा व्यक्ति को अपनी मातृभाषा की विशेषताओं का ज्ञान होता है और तभी बालक अपने प्रथम स्कूल अर्थात् परिवार में रहकर भाषा सीखता है, बोलता है और पढ़ता है किन्तु उसका भाषा का प्रयोग किस प्रकार विभिन्न स्थितियों और

परिवेश में बदल जाता है। हमें एक मौखिक और लिखित भाषा में किस तरह का अन्तर देखने को मिलता है यह सभी मातृभाषा सीखने के समय ही जानकारी मिलती है। इस तरह से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है जिससे हमारी मातृभाषा विकसित होती रहती है।

जब हमें अपनी मातृभाषा को सीखने से हमारे अन्दर एक सकारात्मक आत्म विश्वास की स्थिति उत्पन्न होती है तब हमें दूसरी भाषा न भी आती हो लेकिन हम एक भाषा के चारों कौशलों को सीखकर पूरी तरह से सम्प्रेषण कर सकते हैं अर्थात् एक–दूसरे के भाव को अच्छी तरह से समझ लेते हैं और अन्य भाषाओं को भी समझ लेते हैं चाहे वह विदेशी भाषा ही क्यों न हो तब हम उसे भी समझ लेते हैं। वास्तव में देखा जाए तो किसी भी देश में दो या दो से अधिक भाषाओं का प्रयोग किया जाता है किन्तु तब सरकारी काम काज के लिए देश की राज भाषा अथवा सह राज भाषा का ही हम अधिक से अधिक प्रयोग करते हैं क्योंकि वह असासनी से समझ में आ जाती है। अतः व्यक्ति की मातृभाषा तथा राज भाषा समाज रुप से एक जैसी देखने को मिलती है तब वह सभी सरकारी कार्यों के लिए अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं। यह सभी के लिए सुविधाजनक और आसान होती है एवं सरल भी दिखलाई पड़ती है। अतः ''हमारी मातृभाषा का प्रयोग अधिक से अधिक हो।'' जब हमें अपनी मातृभाषा का पूर्ण ज्ञान हो जाता है तभी हम अनेक विषयों की जानकारी पढ़कर एवं बोलकर प्राप्त कर लेते हैं। इससे अपनी मातृभाषा सीखने के पश्चात् ही अनेक विषयों को हम पढ़ भी लेते हैं और समझ भी लेते हैं। वस्तुतः अपनी मातृभाषा के चारों कौशलों का सही ज्ञान होने पर हम अपनी मातृभाषा में अनेक विषयों को सही प्रकार से पढ़ सकते हैं और लिख सकते हैं। ऐसी स्थिति आने पर अपनी मातृभाषा के ऊपर एक भरोसा हो जाता है क्योंकि उसके अर्थ को सही सम्प्रेषण हम कर सकते हैं।

निष्कर्ष : प्रायः देखा गया है कि जब सभी अपनी मातृभाषा को सीखते हैं और पढ़ते हैं तब हमारी मातृभाषा केवल बोलचाल के लिए नहीं रह जाती है बल्कि वह हमारी एक पहचान का भाग बन जाती है जो हमारी सभ्यता और संस्कृति को दर्शाती है। हम चाहें कोई भी अन्य भाषा सीख लें और बोल लें किन्तु सोचते, समझते हम अपनी भाषा में ही हैं। हम जब बहुत अधिक खुश रहते हैं अथवा हम कभी बहुत दुखी होते हैं तब हमारे मुँह से अपनी मातृभाषा के ही शब्द निकलते हैं। जब हमें कोई सुनता है या देखता है तब हमारे प्रति उसकी संवेदना निश्चित रुप से देखने को मिलती है क्योंकि उसकी संवेदना मातृभाषा के शब्दों से ही झलकती है। ऐसी सहानुभूति पाने के लिए हमारी मातृभाषा ही सहायक होती है इसलिए मातृभाषा से ही कसाव एवं चुस्ती देखने को मिलती है। इस ओर डॉ. भोला नाथ तिवारी कहते हैं कि ''भाषा में न केवल चुस्ती और कसाव आ जाता है वरन् श्रम और स्थान की बचत भी होती है।'' इस तरह से देखा जाए तो मातृभाषा का शिक्षण के क्षेत्र में बहुत बड़ा महत्व है जिससे उस मातृभाषा की एक नई पहचान एवं उसकी परम्परा स्पष्ट रुप से दिखलाई पड़ती है।

सन्दर्भ सूची :

1. डॉ. शशि कुमार–शशिकान्त–हिन्दी भाषा और साहित का उदभव और विकास, के.एल. प्रकाशन, गाजियाबाद, सन्–2023, पृ.–12।
2. रविन्द्र नाथ श्रीवास्तव–भाषा शिक्षण, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, सन्–1952, पृ.–28।
3. सुमन भाटिया–बालक में भाषा का विकास–केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, सन्–1993, पृ.–61।
4. डॉ. नीना अग्रवाल–भाषा परिचय, के.एल. पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद, सन्–2011, पृ.–4।